हिंदी भवन संदेश

(हिंदी प्रचारिणी सभा का सूचना-पत्र)

हिंदी भवन – लोंग माउंटेन

Website: hindipracharinisabha.com --- Email: hindipracharinisabha@hotmail.com

वर्ष 5 अंक 11 अप्रैल 2014

–भाषा गई तो संस्कृति गई –

संपादक / टंकन / सज्जा : यन्तुदेव बुधु

सम्पादकीय

मैं सभा का सदस्य हूँ !

क्या किसी सभा का सदस्य होना बड़ी बात है ? क्या केवल अपना नाम किसी संस्था में लिखवा देने से सदस्यता का फ़र्ज़ पूरा हो जाता है ? क्या सभा की हर बात या हर गतिविधि की जानकारी रखना सदस्य का कर्त्तव्य नहीं है ? क्या सभा की गतिविधियों में भाग लेना व अपना सहयोग देना सदस्य की ज़िम्मेदारी नहीं ? क्या केवल नाम-मात्र के लिए हम सभा का सदस्य बनते हैं ? क्या आपके पास इन प्रश्नों के उत्तर हैं ?

हिंदी प्रचारिणी सभा एक ऐसी संस्था है जिसका मुख्य उद्देश्य हिंदी भाषा का प्रचार करना है। आप अगर ऐसी संस्था के सदस्य हैं और हिंदी भाषा के प्रति आपका कोई लगाव नहीं, हिंदी भाषा के प्रति कोई सहानुभूति नहीं, अपनी भाषा से कोई प्रेम नहीं ? अगर ऐसी बात है, तो आपका सदस्य होना या न होना कोई मायने नहीं रखता है ।

हिंदी प्रचारिणी सभा के प्रायः हर बृहद अधिवेशन में यही बात देखी जाती है कि " कोरम " पाने के लिए अथवा अधिवेशन शुरू करने के लिए सदस्यों का इंतज़ार करना पड़ता है। कभी-कभी तो अधिवेशन स्थगित होते-होते रह जाता है। हर सदस्य को अपनी ज़िम्मेदारी से अवगत होना चाहिए। जब आप सदस्य बने हैं तो आपको सदस्य होने का फ़र्ज़ निभाना चाहिए। सुप्त सदस्यों को जागना है ताकि सभा के कार्य में कोई अड़चन न पैदा हो तथा सभा का कार्य सुचारू रूप से हो। आप सदस्यों से मेरा निवेदन है कि सभा के कार्यक्रमों में भाग लेकर सभा के कार्यों को आगे बढ़ाने में सहयोग दें । ■

यन्तुदेव बुधु

प्रधान-हिंदी प्रचारिणी सभा

इस अंक में पढ़िए :

– हिंदी का 'ग्लैमर' ... शेष	पृ –2
– पो. ताकेशि फुजिई और शेखर सेन	पृ –2
– ज़िलाध्यक्षों की बैठक	पृ –2
– हिंदी साहित्य सम्मेलन – इलाहबाद का दौरा	पृ –3
– 2013-सम्मेलन परीक्षा-फल (प्रथम दस की सूची)	पृ –4
– बृहद अधिवेशन 2014	पृ –4
– चित्रावली	पृ –4

हिंदी का ग्लैमर

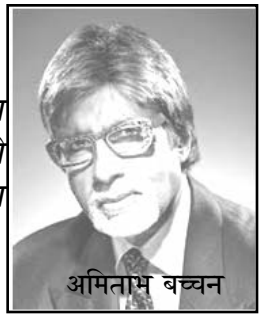

अमिताभ बच्चन

अगर हिंदी फ़िल्म उद्योग को दुनिया में सम्मान पाना है, तो उसे अपनी भाषा और संस्कृति का प्रतिनिधित्व करना होगा ।

हिंदी फ़िल्मों के सुपर स्टार अमिताभ बच्चन फ़िल्म समारोह 'कान' में अपना उद्घाटन-भाषण हिंदी में दिया। अमिताभ बच्चन ने जैसे ही 'भाइयो और बहनो !' कहा, वैसे ही स्टेडियम तालियों से गूँज उठा और यह मौका हर भारतीय के लिए यादगार बन गया ।

'कान' में भारतीय सिनेमा की 100वीं वर्षगाँठ मनाई जा रही थी। अमिताभ ने जब हिंदी में अपनी बात शुरू की तो वहाँ उपस्थित भारतीय भावुक हो गए। कुछ अभिनेता-अभिनेत्रियों को तो अक्सर ऐसा देखा गया है कि इस उद्योग से जुड़े लोग हिंदी बोलने में अब कतराने लगे हैं। बल्कि कई ऐसे हैं जिन्हें हिंदी या तो ठीक से आती नहीं या हिंदी बोलने का उन्हें अभ्यास ज़्यादा नहीं है।

.....(शेष पृष्ठ 2 पर)

ज़िलाध्यक्षों की बैठक

शनिवार 18 जनवरी 2014 को हिंदी भवन, लोंग माउंटेन में ज़िलाध्यक्षों की बैठक लगी । बैठक में लगभग सभा के सभी निरीक्षक उपस्थित रहे । यह बैठक सभा के प्रधान की अध्यक्षता में लगी । साथ में सभा के मंत्री तथा कोषाध्यक्ष भी उपस्थित थे । सभा के प्रधान ने उपस्थित निरीक्षकों का स्वागत किया तथा कार्य-सूची अनुसार बातचीत हुई । कार्य-सूची में मुख्य तीन विषय थे । 1. परीक्षाएँ 2014, 2. पाठ्यक्रम तथा 3. संबद्ध निरीक्षण-प्रपत्र । इसके अलावा प्रधान जी ने बैठकाओं में सुगम हिंदी के प्रयोग पर बात की । यह भी बताया कि वर्षान्त की परीक्षाओं के प्रश्नपत्र इन्हीं पुस्तकों पर आधारित होते हैं। बैठकाओं में पंकज पत्रिका के वितरण का भी ज़िक्र किया गया । निरीक्षकों को सभा की संभावित गतिविधियों की जानकारी दी गई तथा बैठकाओं के निरीक्षण संबंधी सामग्री प्रदान की गई । ■

.....पृष्ठ 1 से शेष – हिंदी का ग्लैमर

जैसे ही इन कलाकारों से बातचीत शुरू होती है, 'आइ एम सो सॉरी, माइ हिंदी इज़ रियली बैड' जुमले के साथ ये अंग्रेज़ी में बात करना शुरू हो जाते हैं। आज भी इंडस्ट्री में ऐसे कलाकारों की लंबी सूची है, जो हिंदी में लिखी पटकथा माँगते हैं जिनमें अमिर खान, शाहरूख खान, अमिताभ बच्चन, नसिरूद्दीन शाह, ओम पुरी, मनोज वाजपेयी, आशुतोष राणा के अलावा बिल्कुल नई पीढ़ी के सुपर हीरो रणबीर कपूर का नाम भी शामिल है। कहा जाता है कि ऋषि कपूर और नीतू सिंह ने रणबीर कपूर को बचपन से ही हिंदी पढ़ने की आदत डाली थी लेकिन इसी उद्योग में एक बड़ा वर्ग ऐसा भी है जिसने छठी के बाद स्कूल का मुँह तक नहीं देखा है और जितना पढ़ा है, वह अंग्रेज़ी ही पढ़ा है । बावजूद इसके, उनकी कामकाजी हिंदी बहुत बेहतर है।

जहाँ तक हीरो-हीरोइन के आम बोलचाल में हिंदी न बोलने की बात है तो उसकी बड़ी वजह यह है कि इनमें अधिकतर विदेश में और अंग्रेज़ी माध्यम के स्कूलों में पढ़े-लिखे हैं, अचानक कोई इनसे हिंदी में बात करना शुरू कर देते हैं। हिंदी सिनेमा के गीत-संगीत से हिंदी को वैश्विक पहचान मिली है। राजकपूर का जब 'आवारा हूँ' गीत प्रसिद्ध हुआ तो पूरा रूस हिंदी बोलने-समझने की कोशिश में जुटा था । यह राजकपूर की अदाकारी, मुकेश की आवाज़ और संगीत का जादू था, जो सिर चढ़कर बोल रहा था ।

पहले हिंदी फ़िल्म-उद्योग में ऐसे लोग थे, जिन्हें हिंदी भाषा और साहित्य की गहरी जानकारी थी। पृथ्वीराज कपूर साहित्य के गम्भीर पाठक थे, बलराज साहनी शान्तिनिकेतन में पढ़ाने के बाद फ़िल्मों में अभिनेता बने । हमारे सितारों को अपनी भाषा और संस्कृति का प्रतिनिधित्व करना होगा । अमिताभ ने प्रतीकात्मक रूप से ही सही, ऐसा किया, यह अच्छी बात है। जिस तरह से बिग बी हिंदी बोलने व हिंदुस्तानी होने पर गर्व महसूस कर रहे थे, क्या हिंदी फ़िल्म उद्योग भी वैसा ही महसूस कर रहा है? ■

साभार

'राष्ट्रभाषा संदेश एवं प्रभासाक्षी'

प्रोफ़ेसर ताकेशी फुजिई और शेखेर सेन का आगमन।

प्रो. ताकेशि फुजिई और शेखर सेन समिति-सदस्यों के साथ ।

शनिवार 11 जनवरी 2014 को दो महान हस्ती हिंदी भवन पधारे । वे विश्व हिंदी सचिवालय द्वारा आयोजित हिंदी दिवस 2014 में भाग लेने आये थे । वे हैं- श्री ताकेशी फुजिई जो टोक्यो युनिवर्ससिटी ऑफ फोरेन स्टडीज़ के हिंदी विभाग के प्रोफ़ेसर हैं तथा शेखर सेन जो गायक, संगीतकार, कवि, कथाकार तथा अभिनेता भी हैं । वे दोनों विद्वान विश्व हिंदी सचिवालय के कार्यवाहक महासचिव श्री गुलशन सुखलाल के साथ हिंदी भवन आए। वे विद्वान हिंदी प्रचारिणी सभा के वर्त्तमान कार्यकारिणी समिति के सदस्यों तथा यहाँ के शिक्षकों से मिले ।

सभा के प्रधान ने उन महानुभावों के सामने सभा का संक्षिप्त इतिहास प्रस्तुत किया । प्रो. फुजिई यह जानकर अति प्रसन्न हुए कि मॉरिशस में सभा द्वारा हिंदी भाषा का प्रचार हो रहा है। प्रो. जी ने अपने देश में हिंदी भाषा के पठन-पाठन का ज़िक्र किया । हमें यह जानकर आश्चर्य हुआ कि वे एक जापानी होते हुए हिंदी का नया शब्द-कोश बनाने के हित में बात कर रहे थे ।

फिर श्री शेखर सेन ने अपनी कलाकारी दिखाई । उन्होंने महान कवि गोस्वामी तुलसीदास पर आधारित एक प्रस्तुति की । हमारा यह सौभाग्य रहा, हमें उनकी यह प्रस्तुति सुनने और देखने का अवसर प्राप्त हुआ। उन महानुभावों के सम्मान में हिंदी भवन में एक सहभोज का भी आयोजन हुआ था । ■

हिंदी साहित्य सम्मेलन – इलाहबाद का दौरा ।

मॉरिशस में हिंदी प्रचारिणी सभा द्वारा आयोजित सम्मेलन की परीक्षाएँ (परिचय से उत्तमा–साहित्य रत्न तक) इलाहबाद के हिंदी साहित्य सम्मेलन विश्वविद्यालय के सहयोग से होती है। हिंदी प्रचारिणी सभा इन परीक्षाओं का संचालन करती है ।

परीक्षाओं से सम्बन्धित कार्य हेतु सभा के प्रधान श्री यन्तुदेव बुधु, मंत्री श्री धनराज शम्भु तथा कोषाध्यक्ष श्री टहल रामदीन सभा का प्रतिनिधित्व करने पिछले 10 और 11 फरवरी 2014 को भारत के इलाहबाद शहर में हिंदी साहित्य सम्मेलन के अधिकारियों से मिलने गये हुए थे ।

हिंदी साहित्य सम्मेलन के पुस्तकालय में लक्ष्मीनारायण पाण्डेय जी के साथ सभा के प्रधान और कोषाध्यक्ष ।

सम्मेलन का यह दौरा पूर्ण रूप से सफल रहा । परीक्षा, पाठ्यक्रम, प्रश्नपत्र, प्रमाणपत्र तथा अंकन कार्य को लेकर कई बातों पर प्रकाश डाला गया । सम्मेलन के प्रधानमंत्री श्री विभूति मिश्र से भेंटवार्ता हुई । हम वहाँ के अन्य अधिकारियों से भी मिले । सम्मेलन के अधिकारीगण हमसे मिलकर अति प्रसन्न हुए । हिंदी प्रचारिणी सभा का हिंदी साहित्य सम्मेलन से बहुत पुराना सम्बन्ध है । वहाँ के अधिकारियों ने हमें यह आश्वासन दिया कि कोई भी समस्या हो तो उन्हें तुरन्त सूचित करें, वे उसका हल ज़रूर ढूँढ निकालेंगे । अर्थात वे हमारी सहायता के लिए तत्पर हैं ।

अंत में हमने सम्मेलन के परीक्षा–विभाग के अधिकारियों को मॉरिशस में आयोजित सम्मेलन की परीक्षाओं के दौरान यहाँ आने के लिए आमंत्रित किया । मॉरिशस आने का आमंत्रण पाकर वे अति प्रसन्न हुए । ■

2013 के सम्मेलन की परीक्षाओं में दस प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले छात्रों की सूची ।

कक्षा – परिचय

स्थान	नाम		पता
1.	ताश्विनी	उजुधा	सें जुलियें दोतमाँ
2.	वन्दना	धनपत	वाक्वा
3.	नैनिका	सहाय	बोनाकेई
4.	दुर्गेश्वरी	बोमी	मार ला शो
5.	चेलश्री	छोटी	मोंताई ब्लांश
6.	नवमितसिंह	नोनकू	कारच्ये मिलितेर
7.	गांधीनी	राजकुमार	दागोचियेर
8.	देशना	जयमंगल	लालमाटी
9.	तिसमा देवी	झल्लू	काँ दे मास पावे
10.	हेशना देवी	किसुन	सें प्येर

कक्षा – प्रथमा

1.	सत्यवीर	कुन्जा	वेरदें
2.	नर्वदा	खुबलाल	मार ताबा
3.	त्वीशा	राधवा	कात्र बोन
4.	भूमेश्वर	तुलसी	लावाँचीर
5.	रेशना	गोपी	फेनिक्स
6.	लवना	कौलेसर	सें जुलियें विलाज़
7.	अरूषा	बकतावर	कात्र बोन
8.	श्रीता देवी	देवाकरण	सें प्येर
9.	कीर्ति	जोनकी	ग्राँ बुआ
10.	प्रेयशी	बालगोबिन	माहेबर्ग

कक्षा – मध्यमा

1.	भिनेश्वरी	गंगाबिसुन	प्वेंत ओ पिमाँ
2.	मनीता	बसतोम	कात्र बोन
3.	मधुवैशाली	ठाकुर	लालमाटी
4.	केशनी	नरकू	शामुनी
5.	परमिता शर्मा	सिगुलाम	लोंग माउंटेन
6.	युथिका	जालिम	कात्र बोन
7.	रोशिना	गणेश सिंह	कात्र बोन
8.	प्रियंका	खेदू	प्लेन मानयाँ
9.	केशवाणी	झोरी	तेर रूज़
10.	संस्कृति	सिबरण	माहेबर्ग
10.	शीतल	सबनोत	फ़ेनिक्स

कक्षा – उत्तमा (साहित्य रत्न)

1.	प्रियंका देवी	हरि	लालमाटी
2.	रेश्मा	रघुमन्दन	ग्राँ गोब
3.	केशनी	बुधु	सेबासतोपोल
4.	हुताशना	रामदेवर	मोर्सल्माँ सें तान्द्रे
5.	सिन्दी	रसियावन	न्यू ग्रोव
6.	अनिता	रघुमन्दन	ग्राँ गोब
7.	शानविदाशा	गजाधर	दागोच्येर
8.	लक्षिता	झावरी	लोंग माउंटेन
9.	तुषा लक्ष्मी	झगेरू	पोर लुई
10.	वर्षा	मुराखान	कात्र कोको

सभा का बृहद अधिवेशन 2014

सभा का बृहद अधिवेशन ता. 29.03.14 को हिंदी भवन के सुरुज प्रसाद मंगर भगत सभागार में 12.30 बजे के बजाय 13.00 बजे शुरू हुआ । कुल 32 सदस्य उपस्थित रहे । प्रधान जी ने सदस्यों का स्वागत किया तथा सभा के पूर्व सदस्य श्री मंगर तथा श्री रति जी की स्मृति में एक मिनट का मौन धारण किया गया, तथा श्रद्धांजलि स्वरूप प्रधान जी ने उनके सहयोग के लिए उन्हें आभार प्रकट किया । मंत्री जी ने वर्ष 2013 के कार्यवृत का विवरण पढ़ा । उसके बाद सभा के प्रधान ने 2013 की अपनी रिपोर्ट दी । रिपोर्ट में वर्ष भर की गतिविधियों का विवरण था । प्रधान जी ने यह भी बताया कि सभा की वेब-साईट पर सभा से संबंधित सूचनाएँ एवं हिंदी भवन संदेश के अंक भी देखे जा सकते हैं । इसके बाद कोषाध्यक्ष श्री टहल रामदीन ने वर्ष 2013 के आय-व्यय का लेखा प्रस्तुत किया, तथा वर्ष 2014 का अनुमानित आय-व्यय का लेखा पारित करवाया । अधिवेशन लगभग तीन बजे समाप्त हुआ । ■

चित्रावली : हिंदी साहित्य सम्मेलन, इलाहबाद से लिये गये चित्र ।

हिंदी साहित्य सम्मेलन का संग्रहालय

प्रधान, मंत्री तथा कोषाध्यक्ष प्रधान मंत्री विभूति मिश्र जी के साथ ।

मंत्री शम्भु जी पुस्तकालय में पुस्तकें देखते हुए ।

प्रधान बुधु जी सम्मेलन के मुद्रणालय में अधिकारियों के साथ ।

सभा के प्रधान, मंत्री तथा कोषाध्यक्ष सम्मेलन भवन के सामने ।

कोषाध्यक्ष रामदीन जी सम्मेलन के पुस्तकालय में ।